'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

विवेकानंद कॉलेज
कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

ISSN : 2281-8848

VIVEK
RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue on

Indian Council of
Social Science Research
SPONSORED

विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय : दशा और दिशा
(भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में)

March, 2022

Shot on Y91
vivo dual camera
2022.03.21 13:54

30	विमुक्त घुमंतू समुदाय का जीवन दर्शन	डॉ विश्वनाथ किशन भालेराव	129
31	घुमंतू बंजारा समाज की संस्कृति	प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके	134
32	विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय की दशा और दिशा	डॉ. शिंदे मालती धोंडोपन्त	137
33	भारतीय साहित्य में विमुक्त घुमंतू समुदाय जीवन	डॉ.संतोष बबनराव माने .	144
34	नंदीवाला समाज की बोली का अध्ययन	डॉसविता कृष्णात पाटील .	147
35	'उपेक्षित विमुक्त -घुमंतू समुदाय की दास्तान हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में'	डॉ.सूर्यकांत शिंदे	151
36	विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय: दशा और दिशा ('उचक्का' आत्मकथा के संदर्भ में)	सुभाष विष्णु बामणेकर	155
37	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और घुमंतू समुदाय	अनिल विठ्ठल मकर	160
38	" 'उचक्का' आत्मकथा में चित्रित जनजातीय समस्याएँ "	प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	163
39	वंचितों ,घुमन्तु आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	प्रा . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	166
40	विमुक्त एवं घुमंतू समुदाय : अवधारणा एवं स्वरूप	डॉ. निशाराणी महादेव देसाई	170
41	मराठी घुमंतू समुदाय के गीतों द्वारा प्रबोधन	पूनम शर्मा संतोष वसंत कांबले	173
42	भटक्या - विमुक्तांची आत्मकथने	डॉ. आर. के. शानेदिवाण	177
43	आदिवासी जमातीचे सामाजिक जीवन	डॉ. ज्योती रामराव रामोड	181
44	घुमंतू की वर्तमान दशा और दिशा	प्रा.डॉ. अशोक तुकाराम जाधव	184
45	[illegible]तून साकारलेली वारली	डॉ. कविता अ. गगराणी	188

Shot on Y91
vivo dual camera
2022.03.21 13:52

भारतीय साहित्य में विमुक्त घुमंतू समुदाय जीवन

डॉ.संतोष बबनराव माने,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज ४१६५०२
जिल्हा – कोल्हापूर (महाराष्ट्र)
मो. ९५५२०९३९७२

सारांश

विभुक्त घुमंतु समुदाय भारतीय समाज का ही अंग है फिर भी अन्य समाज की तरह इन्हे न्याय कम मिला है। यह समुदाय कभी अस्पृश्य के रूप में सामने आता है तो कभी पराक्रमी है। इस समुदाय में देशभक्ति भी सहज दिखाई देती है। हिंदू जाती से जुडे इस समाज को उपेक्षित रहना पडा है। इस उपेक्षित समाज के जीवन चरित्र को देखकर पाठक के मन में इनके प्रती दया, सहानुभूती प्रतीत होती है।

बीज शब्द- भारतीय, समाज, विमुक्त, घुमंतु।

प्रस्तवना

भारतीय समाज विविध जाती-धर्म से जुडा रहा है। भारत में विविध जाती धर्म होने पर भी सामाजिक एकता कायम है। बहु धर्म, बहु समाज और बहु समाज इस देश में है। परिणाम विविध भाषाओं का यह देश रहा है। भारतीय संविधान में अठारह से अधिक भाषा को महत्व दिया है। भारत में भाषा और बोलीओं की संख्या अधिक है। विविध भाषाएँ भी विविध समाज को दर्शाती है। जैसे हिंदी, मराठी, राजस्थानी, कन्नड, गुजराती आदी है। इन सभी भाषाओं के विविध साहित्य को भारतीय साहित्य के रूप में रखा जाता है भारतीय समाज में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य समाज सामने रखकर बीसवी सदी तक अधिक साहित्य लिखा गया। सन १९४७ की आजादी के बाद भारतीय साहित्य में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य के साथ अन्य समाज पर भी साहित्य लिखना शुरू हुआ। आदिवासी, घुंमतू समुदाय जो अब तक साहित्य के क्षेत्र में कम रहा वह भी अन्य समाज की तरह साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ चुका है।भारतीय साहित्य में हिंदी तथा मराठी साहित्य में आदिवासी तथा घुंमतू समाज का चित्रण अधिक मात्र में हुआ है।

भारतीय हिंदी साहित्य में जो संत धारा रही है उसीप्रकार मराठी साहित्य में भी संत धारा रही है। इस देश के महाराष्ट्रीय इतिहास में समाज की संस्कृती सभ्यता अलग रही है। रामायण से लेकर अब तक मुगलों एवं अंग्रेजो के कालखंड में इस महाराष्ट्रीय समुदायो का कार्य इतिहास में उल्लेखनीय है। वैसे भारतीय समाज के विविध समाजों का अध्ययन करना कठीण काम है। फिर भी अधिक मात्र में समाज या समुदायों का जीवन साहित्य में चित्रित है। लेखक हो या पाठक समाज की सभ्यता और संस्कृती को समझना दोनों के लिए आकर्षण है। वैसे समाज में दो स्तर हम देख सकते है। एक वह जो प्रस्थापित है और दुसरा वह जो घुंमतू अर्थात भटकंती करके जीवन जीनेवाला। प्रस्थापित समाज का अपना घर गॉव होता है परंतु घुंमतू समाज का गावं या घर नही रहा है। उसमे कैकाडी, लमाण, बंजारा, नंदीवाले, गोसावी, कुडमुडे जोशी, फासेपारधी, गोपाल, रामोशी, ढोर, कोल्हाटी नंदीवाले, धिसाडी, पारधी आदी अनेक है। यह घुंमतू समाज अधिक मात्रा में महाराष्ट्र में है। वैसे भारत के अन्य राज्यों में भी यह समाज [illegible] रहा है।

Shot on Y91
vivo dual camera
2022.03.21 13:55

ISSN : 2581-8848

प्रस्थापित जातियों का अपना जीवन सरल एवं उच्च श्रेणी में रहा है। "शासक से लेकर सामान्य व्यक्ती तक का पुरोहित ब्राम्हण होता था। ब्राह्मणो के कुछ परिवार राजकुलो तथा सामन्तों के पारिवारिक में पुरोहित बने हुए थे। धार्मिक कार्मकांडो तथा अनुष्ठानों के अवसर पर संबंधित शासक अथवा सामन्त का प्रतिनिधित्व करते थे।"१. इसतरह ब्राम्हण, क्षत्रिय , वैश्य समाज के लोग अपने कार्य के बल पर प्रस्थापित रहे। परंतु कुछ समाज ऐसा भी रहा जो गांव गांव भटकता रहा। जहाँ पर उसका पालन-पोषण होता वही वह कार्यरत रहते। मेहतर समुदाय जो पहले काल में मलमूत्र साफ करनेवाला समाज था। महाराष्ट्र में यह समाज उत्तरीय राज्यों से आया है। मलमूत्र साफ करनेवाला यह समाज अपने ही समाज में उपेक्षित रहा है। " हा समाज पूर्वीच्या काळी अत्यंत शूर, धाडसी आणि योद्धा म्हणून प्रसिद्ध होता परंतु मोगलांच्या काळात त्यांना पराभव पत्करावा लागला. लढाईत या लोकांना मोगलांनी पराजित केले आणि गुलाम बनवले. २."गुलामी में अपमानित, उपेक्षित होनेपर यह समाज भी घुमंतू समुदायों में आया। घुमंतू समुदाय को देखा जाए तो वह उपेक्षित, वंचित या निम्न के रूप में रहा है। उस समाज में क्रांतिकारक या उच्चता भी कुछ समुदाय में उल्लेखनीय है। यह बंजारा (गोर) समाज को घुमंतू समाज के रूप में देखा जाता है। यह समाज अधिक राज्यों में है। बंजारा के लोग अपना भगवान संत सेवालाल को मानते है। संत सेवालाल को सेवभाया भी कहा जाता है। बंजारा समाज प्राचीन काल के इतिहास में उल्लेखनीय है। हर राज्य के राजा के दरबार में इस समाज का कोई महासेनानी रहा है। इस समाज का मुख्य व्यवसाय अनाज का लेन देन करना था। जिसके पास गाय-बैल जादा होते वह अधिक श्रीमंत होता इस समाज की संस्कृती सभ्यता महत्वपूर्ण रही है।

बिहार में मुण्डा आदिवासी परिवार का जीवन अलग रहा है। पहले तो यह बिहार में था परंतु आज वह अनेक बसा है। मुण्डा आदिवासी शिकार करके अपनी उपजीविका करते थे। समाज के परिवर्तन के साथ इस समाज में भी परिवर्तन हुआ। गांव गांव जाकर कम्बल बेचना इसका व्यवसाय रहा। प्रकृती को पूजा करना इस परिवार का उत्सव रहा है। उत्सव के समय घर-घर जाकर फुल बाँटना और कोई वस्तू प्राप्त करना यह भी उनकी साधना रही है। यह आदिवासी उत्सव अलग पर्व रहा है। सरना उनका देवस्थान है। 'गाव का पाहान इन फुलों को लेकर सरना में गाव के देवी –देवताओं की पूजा कर उन्हें प्रसंन्न करता है। इस दिन मिट्टी के बर्तन में सामुहिक भोजन तैयार किया जाता है। " ३. इस परिवार में विवाह तो पहले लडका-लडकी के पसंद से होते थे। लेकीन आज बाप के पसंद से इनके विवाह होते है। जंगलों में रहनेवाला यह समाज बडा साहसी था।

मराठी साहित्य मे घुमंतू समुदाय पर लिखने वाले लेखक लक्ष्मण माने है जिन्होने उपरा इस कादंबरी में कैकाडी, लमाण, बंजारा समाज जीवन का चित्रण किया है। इस समुदाय के लोग घुमंतू रहे है। किसी भी गाव में जाकर पाल या डेरा डालकर रहना और अपने परिवार के उदरनिर्वाह के लिए जोखीम भरे काम करना या कला करके लोगो का मनोरंजन करना उनका व्यवसाय था। उपरा इस कादंबरी में घुमंतू समुदाय का जीवन और उनका संघर्ष चित्रित है। "त्या खोकडयात विन्हाड होत हुत. दिवसभर गाव मागितला , लई माचली, दोरीवर उडया मारल्या, केसान दगड उचलला." ४. कभी कभी गावं में चोरी हो जाती तो शक के आधार पर इन्हे ही चोर समझकर पुलिस पकडती। पुरे परिवार को इस पीडा से त्रासदि में रहना पडता। उपरा इस कादंबरी का हिंदी भाषा में अनुवाद हुआ है। सुर्यनारायण रणसुभे का उटायगीर यह उपन्यास यही है। दादासाहेब गायकवाड का उचल्या यह उपन्यास घुमंतू समुदाय पर चित्रित है। महाराष्ट्र के उचल्या समुदाय के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास रहा है। बालासाहेब गोरे का नंदीवाले यह उपन्यास भी विमुक्त नंदी घुमंतू समुदाय के जीवन पर आधारित है। बैल लेकर गावं –गावं , घर-घर जाकर आस्था दिखाना या उनका भविष्य बताना, वंश परिवार का कथन करना उनका व्यवसाय होता। दादासाहेब गोरे का गवाळ यह उपन्यास कुंदमुडे जोशी घुमंतू समुदाय पर आधारित है। पहले तो यह समाज भविष्य बताकर अपनी उपजीविका चलाता। बाद में कंबल बेचने का व्यवसाय करता रहा। इन उपन्यासों में अस्थायी घुमंतू समुदाय का जीवन, परिवार और संस्कृति झलकती है। गावं के लोगों या पुलिस के कारन भी इन्हे कभी-कभी संकटो से सामना करना पडा है, सहना भी पडा है। नंदीवाले, गोसावी,

Shot on Y91
vivo dual camera
2022.03.21 13:53

ISSN : 2581-8244

बंजारा कुडमुडे जोशी, कैकाडी, लमानी, फासे पारधी , बुरुड, कोल्हारी आदि अनेक घुमंतु समुदाय में आते है। इस विभुक्त घुमंतु समुदाय पर भारतीय साहित्य में चित्रण कम हो रहा है।

इसतरह विभुक्त घुमंतु समुदाय भारतीय समाज का ही अंग है फिर भी अन्य समाज की तरह इन्हे न्याय कम मिला है। यह समुदाय कभी अस्पृश्य के रूप में सामने आता है तो कभी पराक्रमी है। इस समुदाय में देशभक्ति भी सहज दिखाई देती है। किंतु जाती से जुडे इस समाज को उपेक्षित रहना पडा है। इस उपेक्षित समाज के जीवन चरित्र को देखकर पाठक के मन में इनके प्रती दया, सहानुभूती प्रतीत होती है। लक्ष्मन माने, दादासाहेब मोरे, सुर्यनारायण रणसुभे जैसे लेखकों ने इस समाज पर साहित्य लिखकर समाज में परिवर्तन या एकता स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। आज अनेक सामाजिक विकास की संस्थाएं है जो इस समाज में सुधार के लिए कार्यरत रहे यह अपेक्षित है।

संदर्भ ग्रंथ –

१. भारतीय सामाजिक संस्थाएँ – डॉ. काळूराम शर्मा पृष्ठ ३३
२. जाती आणि जमाती – रामनाथ चव्हाण पृष्ठ ०९
३. मुंण्डा आदिवासियों कि भाषाएँ और उनकी संस्कृती – डॉ . रुपांशुभाला पृष्ठ ६५
४. उपरा – लक्ष्मण माने पृष्ठ २१

Shot on Y91
vivo dual camera
2022.03.21 13:54